E - Content

Subject : Economics
Class : B.A Part I (Paper II)
Topic : Keynesian Theory of Effective Demand
(कीन्स के प्रभावपूर्ण माँग का सिद्धान्त)

By:
EKATA KUMARI
Guest Faculty
(Assistant Professor)
Rohtas Mahila College.
Email I'd:
bhardwajekata@gmail.com

Explanation of Keynesian theory:

कीन्स के रोजगार सिद्धान्त की व्याख्या चार्ट द्वारा दर्शाते हैं :—

रोजगार (N), उत्पादन (P) और आय (Y)
(Employment, Production & Income)
(निर्भर है)

↓

प्रभावपूर्ण माँग (पर निर्भर है)

↓

कुल पूर्ति क्रिया
(अल्पकाल में यथा स्थिर रहती है)

कुल माँग क्रिया
(निर्भर है)

↓

उपभोग पर (निर्भर है)

विनियोग पर (निर्भर

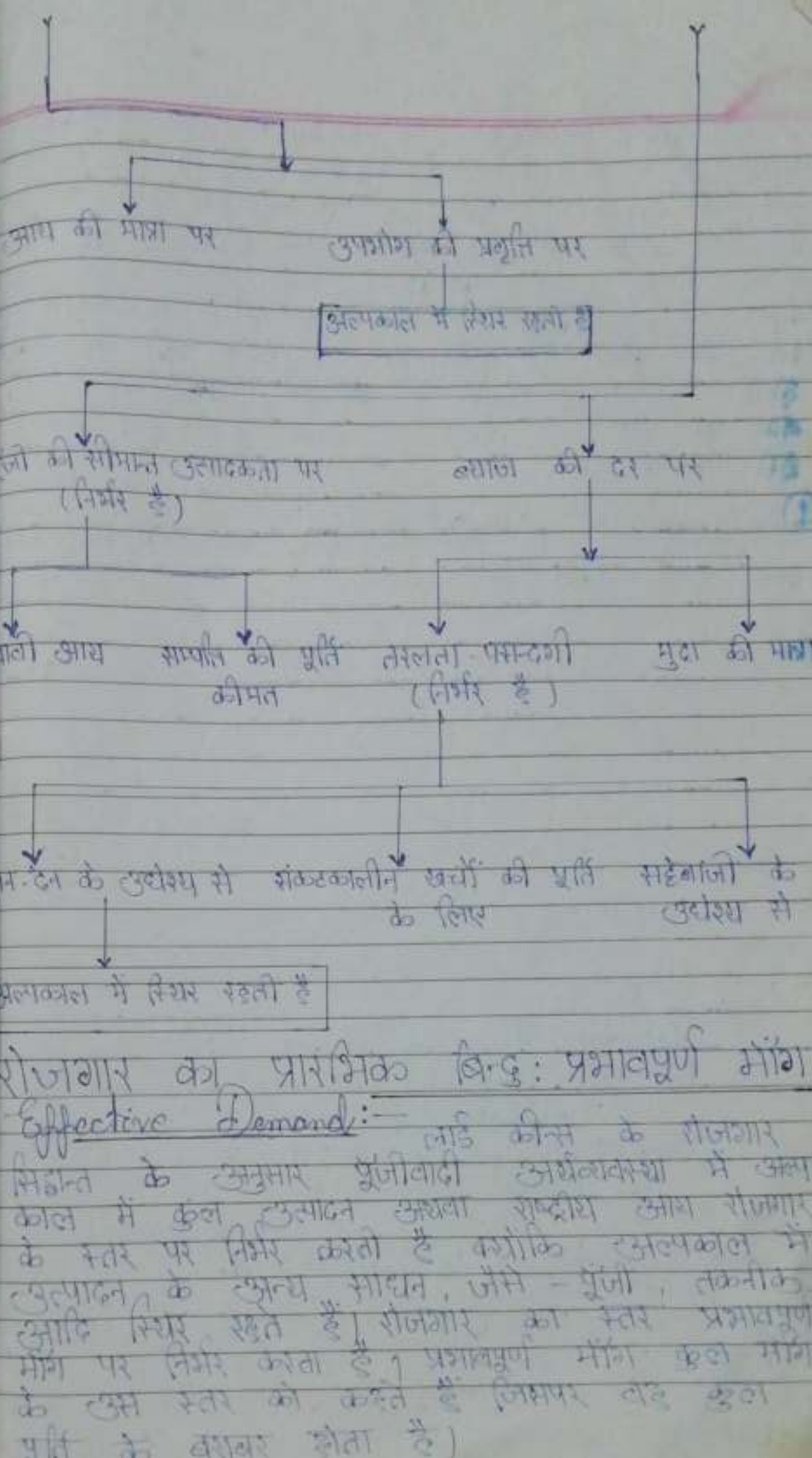

रोजगार का प्रारंभिक बिन्दु: प्रभावपूर्ण माँग

Effective Demand:— लार्ड कीन्स के रोजगार सिद्धान्त के अनुसार पूँजीवादी अर्थव्यवस्था में अल्पकाल में कुल उत्पादन अथवा राष्ट्रीय आय रोजगार के स्तर पर निर्भर करती है क्योंकि अल्पकाल में उत्पादन के अन्य साधन, जैसे - पूँजी, तकनीक आदि स्थिर रहते हैं। रोजगार का स्तर प्रभावपूर्ण माँग पर निर्भर करता है। प्रभावपूर्ण माँग कुल माँग के उस स्तर को कहते हैं जिसपर वह कुल पूर्ति के बराबर होता है।

प्रभावपूर्ण मांग से अभिप्राय अर्थव्यवस्था में मांग के उस स्तर से है जिसके लिए पूर्ति उपलब्ध है और जिसके कारण उत्पादक उत्पादन को और बढ़ाने के लिए तत्पर नहीं है अर्थात यदि उत्पादन को और बढ़ाया होगा तो अर्थव्यवस्था में मांग के स्तर में वृद्धि करनी होगी। प्रभावपूर्ण मांग कुल मांग के उस स्तर को कहते हैं जिस पर वह कुल पूर्ति के बराबर होती है। दूसरे शब्दों में प्रभावपूर्ण मांग कुल मांग वक्र पर स्थित वह बिन्दु है जहां कुल पूर्ति वक्र इसे काटता है।

1. Diagramatic Representation: इसे हम रेखाचित्र के द्वारा दर्शा सकते हैं —

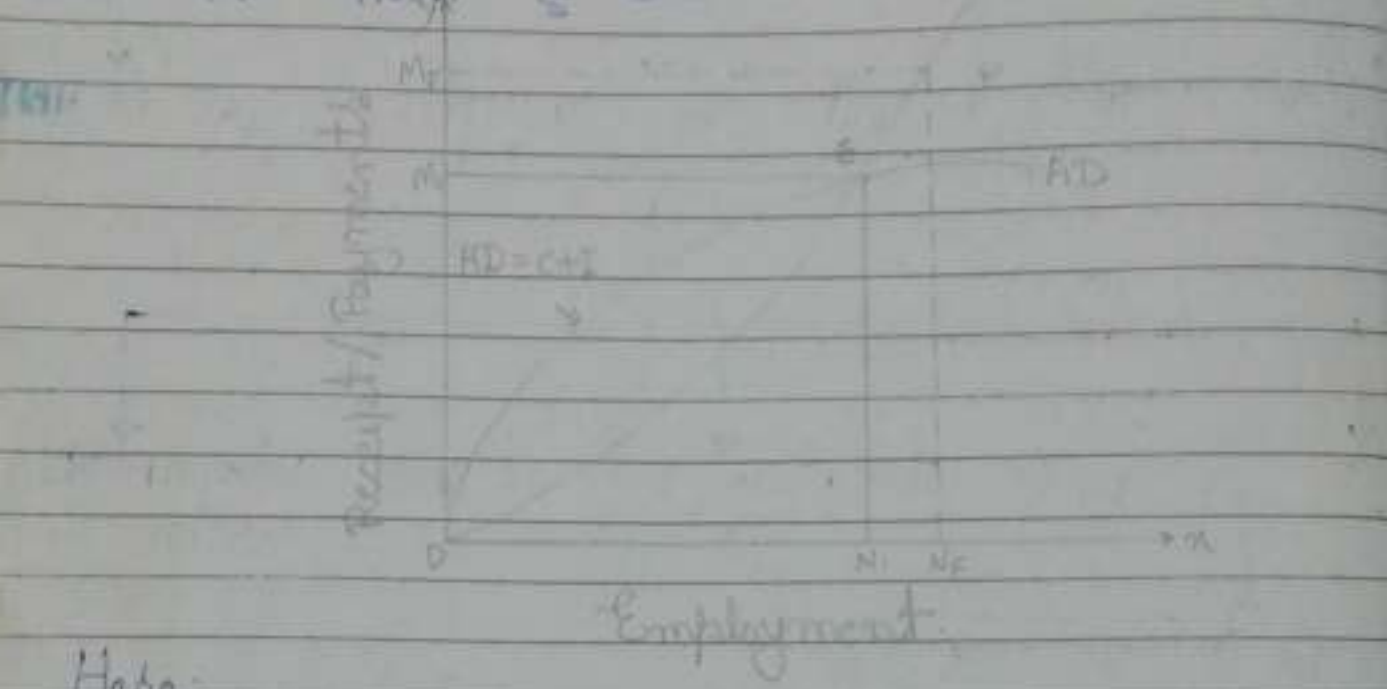

Here;

Aggregate Demand Curve = AD
Aggregate Supply Curve = AS
Employment = ON_1
Receipt / Payments = OM_1
Equilibrium pt = E

So:

Effective demand = E.pt.

(ii) प्रभावपूर्ण मांग कुल उत्पादन को सूचित करता है —

प्रभावपूर्ण मांग अर्थव्यवस्था में मांग के उस स्तर को व्यक्त करती है जिसके

पूर्ति उपलब्ध है, इसलिए प्रभावपूर्ण माँग समाज में होनेवाले कुल उत्पादन या राष्ट्रीय आय की मात्रा को भी सूचित करता है, अर्थात्,

> Effective Demand = National Production or Value of Aggregat Output

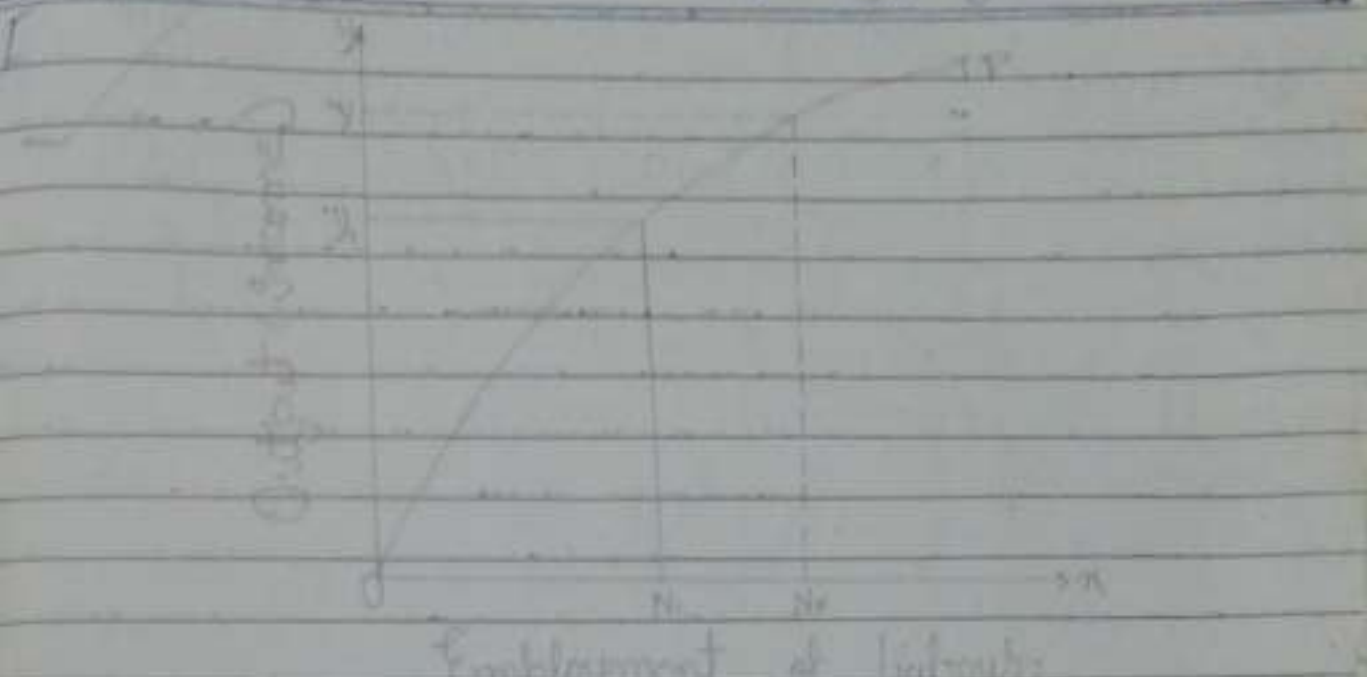

ii) प्रभावपूर्ण माँग राष्ट्रीय आय के बराबर होती है —

इसका कारण यह है कि राष्ट्रीय उत्पादन का कुल मूल्य और उद्योगपतियों द्वारा माल की बिक्री से प्राप्त होनेवाली आय में कोई अन्तर नहीं होता। अतः प्रभावपूर्ण माँग को राष्ट्रीय आय या उत्पादन के साधनों की कुल आय (मजदूरी + किराया + ब्याज + लाभ) के रूप में भी प्रदर्शित किया जा सकता है। अर्थात्,

> Effective Demand = Value of National Output = National Income.

iii) प्रभावपूर्ण माँग अर्थव्यवस्था के कुल व्यय के रूप में प्रदर्शित की जाती है —

प्रभावपूर्ण माँग एक तरफ तो उपभोग की वस्तुओं पर किये गए

राष्ट्रीय व्यय के बराबर होती है; दूसरी तरफ, विनियोग की वस्तुओं पर किए गए राष्ट्रीय व्यय बराबर होती है। अर्थात,

$$E \cdot D = C + I$$

जिसमें,

$E \cdot D$ = प्रभावपूर्ण मांग

C = उपभोग संबंधी वस्तुओं की मांग

I = विनियोग संबंधी वस्तुओं की मांग

इस प्रकार,

$$ED = NP = NI = NE(C+I)$$

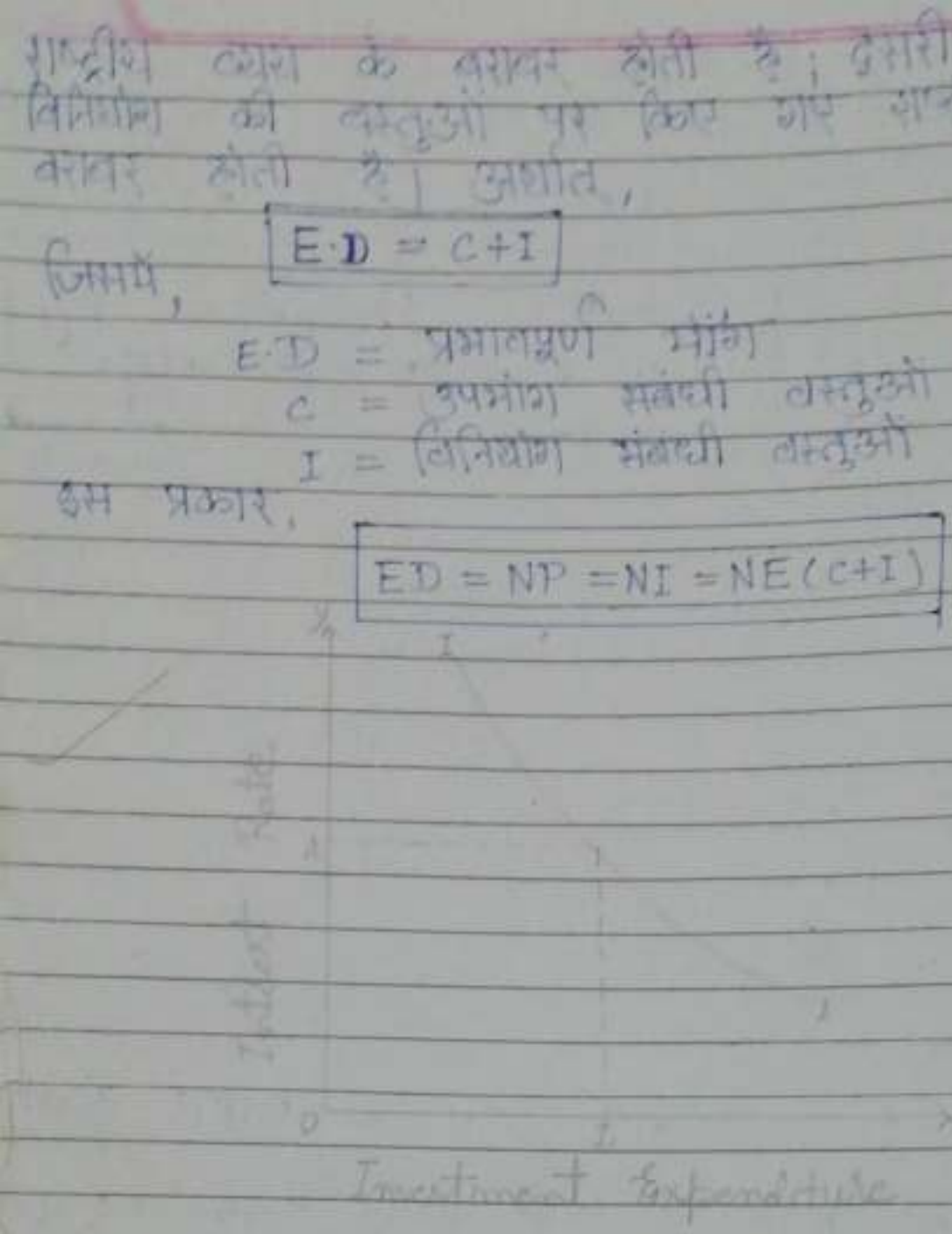

Determination of Effective Demand:

प्रभावपूर्ण मांग का निर्धारण, केन्स के अनुसार, दो तत्वों से होता है: कुल मांग तथा कुल पूर्ति।

एक अर्थव्यवस्था में उत्पादन, आय तथा रोजगार के स्तर पर कुल मांग तथा पूर्ति के द्वारा निर्धारित होते हैं। मार्शल के अनुसार कीमत मांग तथा पूर्ति की बाजार शक्तियों से निर्धारित होती है, जबकि केन्स के अनुसार प्रभावपूर्ण मांग कुल मांग तथा कुल पूर्ति की परस्पर समानता द्वारा निर्धारित होती है। अतः केन्स के रोजगार सिद्धान्त के दो निर्धारक तत्व निम्नलिखित हैं: —

(i) कुल माँग क्रिया या फलन (A.D.F)
(ii) कुल पूर्ति क्रिया या फलन (A.S.F)

(i) **Aggregate Demand Function**: कुल माँग क्रिया मुद्रा की [illegible] राशियों की वह अनुसूची है जिसे अर्थव्यवस्था में रोजगार के विभिन्न स्तरों पर साहसी अपने उत्पादन की बिक्री से प्राप्त करने की आशा करता है। वास्तव में, यह कुल प्राप्ति की ओर संकेत करती है जिससे साहसी अपने वस्तुओं की बिक्री से प्राप्त करता है।

इसे हम एक रेखाचित्र की सहायता से दर्शा सकते हैं :—

Here:

OX = Income & Output
OY = Receipts
DD = Aggregate Demand.

कुल माँग क्रिया के निर्धारक तत्व निम्नलिखित हैं, जो इस प्रकार हैं :—

(a) निजी उपभोग (C)
(b) निजी निवेश (I)
(c) सरकारी व्यय (G)
(d) शुद्ध निर्यात (X − M)

इसके शब्दों में,

$$AD = C + I + G + (X - M)$$

(iii) Aggregate Supply Function: कुल पूर्ति फलन मुद्रा की वह अनुसूची होती है जिसे अर्थव्यवस्था में रोजगार के विभिन्न स्तरों पर साहसी को अपने उत्पादन की बिक्री से अवश्य प्राप्त होनी चाहिए। इसे हम एक रेखाचित्र के द्वारा दर्शा सकते हैं :—

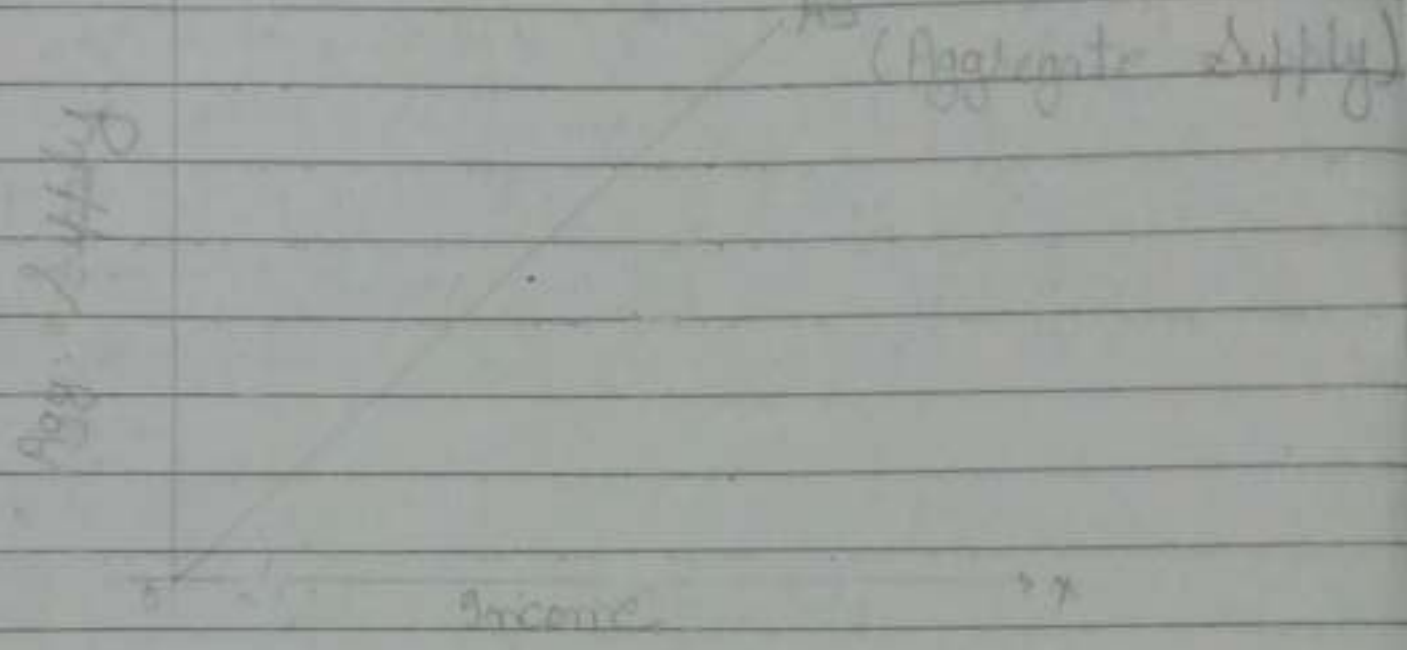

Here;

OX_1 = Income.
OY_1 = Total Supply
AS = Aggregate Supply.